



Sarala Birla University



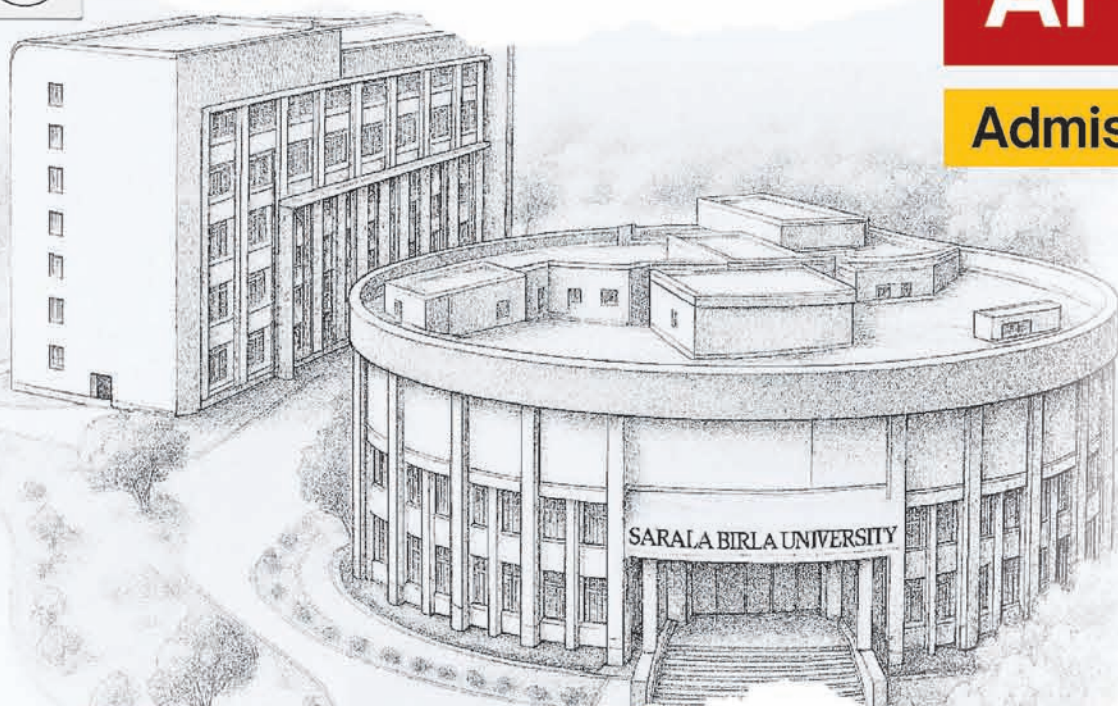
Supported By



& 20+
National MoUs

APPLY NOW

Admissions Open 25 - 26



CREATING GLOBAL LEADERS
For Social & Economic Change...!

Programs Offered

- **ENGINEERING & COMPUTER SCIENCE**
Diploma • B.Tech • M.Tech
Specialization - CSE • ME • CE • EEE • EOE • Electronics
& Computer Engineering
BCA • MCA
- **BUSINESS MANAGEMENT**
BBA • BBA in Stock broking & Portfolio Management
MBA
- **HUMANITIES AND LINGUISTICS**
BA • MA
Specialization - English • Sanskrit
- **COMMERCE**
B.com
Specialization- Accounts • E- Commerce • Taxation
M.com
- **LEGAL STUDIES**
BA LLB • BBA LLB • B.Com LLB • LLB • LLM
- **JOURNALISM AND MASS COMMUNICATION**
BA • MA
- **YOGIC SCIENCE AND NATUROPATHY**
Diploma • B.Sc • M. Sc
- **APPLIED SCIENCES**
B.Sc Mathematics • M. Sc Data Science
- **SOCIAL SCIENCES**
BA • MA
Specialization - Economics
- **ART, CULTURE & SPORTS**
BA • MA
Specialization - Music • Dance • Drama • Fine Arts
- **PHARMACY**
D.Pharm • B.Pharm
- **NURSING, CLINICAL TECHNOLOGY & PUBLIC HEALTH** ANM • GNM • B.Sc. Nursing

Admission Helpline

1800 890 6077

5000+
Students

65+
Programs

In Campus Hostel
For Boys & Girls

Upto 50% Scholarship
Under Merit/Sports Quota

60 Acres
World Class Infrastructure

100%
Placement Support

50+
Skill Enhancement
Certificates

100+
Companies visited for
Placement

SARALA BIRLA UNIVERSITY

Scan Here to Register

Birla Knowledge City, PO. Mahilong, Purulia Road, Ranchi, Jharkhand,
India - 835103

1800 890 6077 / +91 95251 10001

admissions@sbu.ac.in

www.sbu.ac.in



उनका केयर हेल्थ ऋण सुर्क्षा बीमा भी किया था। आकस्मिक हादसे में उनकी मौत हुई तो बैंक प्रबंधन वारिस के रूप में 10 लाख रुपये की राशि का क्लेम मंजूर हुआ, बैंक ऋण की बकाया राशि काउंटर शेष राशि उनके बेटे भानु कुमार मुंडा को दिया। केयर हेल्थ इश्योरेंस के रिजलन हेड हितेश माथुर ने बताया कि इस बीमा में बैंक से लिये गये किसी प्रकार के लोन को जमा करने के बाद क्लेम राशि हिराग्राही के वारिस को दी जाती है। इस दौरान बैंक के उपमंडल प्रमुख रावेश कुमार श्रीवास्तव, मार्केटिंग प्रबंधक राजेश झा, शाखा प्रबंधक विजेश कुमार, केयर हेल्थ इश्योरेंस कंपनी के रिजलन हेड हितेश माथुर एवं उनके सहयोगी कृष्णा किशोर सहित अन्य कई लोग मौजूद थे।

पहलगाम में जम्मू-कश्मीर कैबिनेट की विशेष बैठक विश्वास बहाली की दिशा में अहम प्रयास है। इससे देश के लोगों में तो भरोसा जगेगा ही, सीमापार तक भी यह संदेश पहुंचेगा कि आतंकी गतिविधियां जम्मू-कश्मीर की तरक्की को रोक नहीं सकतीं।

पर्यटक बढ़े : सरकारी आंकड़े बताते हैं कि विशेष दर्जा खत्म होने और केंद्र शासित प्रदेश बनने के बाद से जम्मू-कश्मीर में पर्यटकों की आमद बढ़ी है। विधानसभा में पेश रिपोर्ट के मुताबिक, 2021 से 2024 के बीच 7.49 करोड़ से ज्यादा टूरिस्ट यहां पहुंचे थे। इसमें से 99.93 लाख से अधिक पर्यटकों ने घाटी की सैर की। जम्मू के मुकाबले कश्मीर का डेटा भले कम हो, लेकिन इसमें लगातार बढ़ोतरी हो रही है। अच्छी बात यह रही कि इस दरम्यान कश्मीर में विदेशी पर्यटक अधिक आए, 2024 में 65 हजार से भी ज्यादा।

डराना था मकसद : ये आंकड़े केवल पर्यटन का हाल नहीं बताते, बल्कि साबित करते हैं कि जम्मू-कश्मीर, खासकर घाटी में चीजे सामान्य हो रही थीं। जो इलाका आतंकवाद का दश दशकों से झेल रहा था, वह पूरे भारत के साथ कदमताल करने लगा था। आतंकी इसी पर चोट करना चाहते थे और पहलगाम हमले का मकसद यही था। इसी वजह से पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों ने टारगेट किलिंग कर देश में सांप्रदायिक उन्माद फैलाने की कोशिश की।

उमर अब्दुल्ला ने नीति आयोग की बैठक में यह सुझाव भी दिया था कि पीएसयूएस के लिए कश्मीर में बैठक करना अनिवार्य होना चाहिए। साथ ही, संसदीय समितियों को भी घाटी में जाकर मीटिंग करनी चाहिए।

है, यह चोट पूरे राज्य की आर्थिक सेहत और टूरिज्म बढ़ाने के लिए हाल के बरसों में किए गए तमाम प्रयासों पर है।

अकेला नहीं छोड़ना : सीएम उमर अब्दुल्ला ने ठीक कहा कि अगर हम इन जगहों पर नहीं जायेंगे तो कौन जायेगा। अगर बंदूकों से डरकर घाटी को अकेला छोड़ दिया जाता है, तो वह आतंकी मंसूखों की जीत होगी। यही तो वे चाहते हैं। उनकी गोलियों का जवाब देने के साथ-साथ यह संदेश भी पहुंचना चाहिए कि हिंदुस्तान के किसी कोने में आतंकवाद के लिए कोई जगह नहीं है।

प्रयास बढ़ाये जायें : उमर अब्दुल्ला ने नीति आयोग की बैठक में यह सुझाव भी दिया था कि पीएसयूएस के लिए कश्मीर में बैठक करना अनिवार्य होना चाहिए। साथ ही, संसदीय समितियों को भी घाटी में जाकर मीटिंग करनी चाहिए। ये कदम छोटे-छोटे ही सही, पर स्थानीय लोगों में सुरक्षित होने का अहसास पैदा करने के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं। इस कड़ी में पूर्व सीएम फारूक अब्दुल्ला की यह बात भी गौर करने लायक है कि केवल टूरिज्म पर निर्भर न रहकर इंडस्ट्री लावी जाये। इससे तमाम दूसरे रास्ते अपने आप खुल जायेंगे।

अभिमत

आजाद सिपाही



तुसि सिंघल सोमानी

पहलगाम, जिसे चरवाहों की घाटी के नाम से जाना जाता है, कश्मीर की सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है। यह खामोशी से हिमालय की गोद में बसा है, जहां बफीली नदियां, हरे देवदार के जंगल और दूर तक फैले घास के मैदान हैं। दुनिया भर से लोग शांति महसूस करने, टट्टू की सवारी का आनंद लेने, नदी किनारे गर्म कहवा पीने और ताजी पहाड़ी हवा में सांस लेने के यहां लिए आते हैं। इसे धरती पर स्वर्ग कहा जाता है।

इस साल, वसंत का मौसम कश्मीर घाटी के लिए विशेष था। महामारी और राजनीतिक अशांति के कारण वर्षों की खामोशी के बाद, कश्मीर का पर्यटन सीजन आखिरकार उम्मीद के संकेत दे रहा था। स्थानीय बाजार फिर से खुल रहे थे, और होमस्टे को फिर से बुकिंग मिल रही थी।

क्षेत्र की अधिकांश महिलाओं के लिए पर्यटन पैसे कमाने, अपने घरों से बाहर निकलने और अपनी पहचान बनाने का एक तरीका बन गया है। वे खाने के स्टॉल चला रही थीं, प्रकृति की सैर करा रही थीं, हाथ से बने कपड़े बेच रही थीं और पर्यटकों को कढ़ाई सिखा रही थीं। धीरे-धीरे और चुपचाप, वे सम्मान और आर्थिक स्वतंत्रता का जीवन जी रही थीं।

कश्मीर में अस्थिर परिस्थितियों सीधे तौर पर वहां के लोगों के लिए आर्थिक आघात में बदल जाती हैं।

लोकल सर्किल्स के एक हालिया सर्वेक्षण के अनुसार, देश के 62 से अधिक परिवारों ने कश्मीर जाने का प्लान कैसल कर दिया। होटल और गेस्टहाउस खाली होने लगे। हमले से पहले पहलगाम में गुंज रही हंसी, कदमों की आहट और कैमरे विलक-विलक एकदम से बंद हो गयी। सुनायी देने लगी तो चीख-पुकार, मातम, फौजी जूतों की थाप। और धरती के इस स्वर्ग को खौफ और पहले वाले सन्नाटे ने अपने आगोश में ले लिया। यह सन्नाटा सिर्फ व्यापार का नुकसान नहीं है। कई महिलाओं के लिए यह उनकी आय का एकमात्र स्रोत का खोना भी है।

कश्मीरी महिलाओं के सामने फिर आया 'बड़ा संकट'



पूर्व के एक अध्ययन से पता चला है कि कश्मीर में पर्यटन ने महिलाओं को पैसे कमाने, नये कौशल सीखने और अधिक स्वतंत्र होने का मौका दिया है। पर्यटन का हिस्सा बनना उनके लिए काम से कहीं बढ़ कर है - यह उनकी पहचान है, उनका अस्तित्व है, मगर एक हमले ने इन महिलाओं को जिंदगी की दौड़ में फिर सबसे पीछे लाकर खड़ा कर दिया है।

लेकिन 22 अप्रैल, 2025 को एक ही झटके में सब कुछ बदल गया। उस दिन, हथियारों से लैस पांच आतंकवादियों ने पहलगाम में पर्यटकों के एक समूह पर हमला किया। यह अचानक और क्रूर था। इसमें छब्बीस लोग मारे गये और बीस से ज्यादा घायल हो गये। यह हाल के वर्षों में भारत का सबसे खतरनाक आतंकी हमला बन गया। इस खबर ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। इसके बाद लोगों के साथ जो हुआ - खास कर कश्मीर की महिलाओं के साथ-वह काफी हद

तक अनदेखा रहा। पर्यटकों ने तुरंत अपनी यात्रा योजनाएं रद्द करनी शुरू कर दीं।

लोकल सर्किल्स के एक हालिया सर्वेक्षण के अनुसार, देश के 62 से अधिक परिवारों ने कश्मीर जाने का प्लान कैसल कर दिया। होटल और गेस्टहाउस खाली होने लगे। हमले से पहले पहलगाम में गुंज रही हंसी, कदमों की आहट और कैमरे क्लिक-क्लिक एकदम से बंद हो गयी। सुनायी देने लगी तो चीख-पुकार, मातम, फौजी जूतों की थाप। और धरती के इस स्वर्ग को खौफ और

पहले वाले सन्नाटे ने अपने आगोश में ले लिया। यह सन्नाटा सिर्फ व्यापार का नुकसान नहीं है। कई महिलाओं के लिए यह उनकी आय का एकमात्र स्रोत का खोना भी है। यह आत्मविश्वास और उम्मीद का नुकसान है।

अरु घाटी के पास एक छोटा सा कहवा स्टॉल चलाने वाली रुबीना की आंखों में आंसू थे जब उन्होंने कहा, हमने अभी-अभी कोविड से उबरना शुरू ही किया था। अप्रैल हमारा सबसे व्यस्त महीना माना जाता था। अब सब कुछ वापस शून्य पर आ

गया है। अनंतनाग की कारीगर शबनम ने कहा, हमें आखिरकार वे पर्यटक मिल रहे थे जो हर साल हमसे खरीदारी करने आते थे। इस हमले ने सबकुछ खत्म कर दिया, पर्यटक अब डरे हुए हैं और हम फिर से पहले वाली स्थिति में पहुंच गए हैं।

पूर्व के एक अध्ययन से पता चला है कि कश्मीर में पर्यटन ने महिलाओं को पैसे कमाने, नये कौशल सीखने और अधिक स्वतंत्र होने का मौका दिया है। पर्यटन का हिस्सा बनना उनके लिए काम से कहीं बढ़ कर है - यह उनकी पहचान है, उनका अस्तित्व है, मगर एक हमले ने इन महिलाओं को जिंदगी की दौड़ में फिर सबसे पीछे लाकर खड़ा कर दिया है।

डर-खौफ के नये माहौल के बीच, अब कई महिलाओं को बाहर जाने की अनुमति नहीं है। परिवार स्थानीय बेटियों को बाजार भेजने से भी डरते हैं। महिलाओं द्वारा चलाये जा रहे होमस्टे खाली हैं। कहवा स्टॉल बंद हैं। कढ़ाई की कार्यशालाएं रुकी हुई हैं। सब कुछ फिर से जम गया है।

इस हमले का वास्तविक नुकसान हमारी नजर से परे है। इसने महिलाओं की प्रगति को छीन लिया है। इसने सार्वजनिक स्थान पर उनकी आवाज और उपस्थिति को छीन लिया है। इसने उन्हें फिर से अंधकार में धकेल दिया है। कश्मीर में अस्थिर परिस्थितियां सीधे तौर पर वहां के लोगों के लिए आर्थिक आघात में बदल जाती हैं। खास कर, महिलाओं के लिए स्थिति और भी ज्यादा बुरी हो जाती है, क्योंकि वैकल्पिक रोजगार तक उनकी पहुंच पहले से ही सीमित है।

(लेखक अर्थशास्त्री हैं और केजीएस एडवाजर्स की सीडओ हैं।)

कोल्हान की खबरें

पटमदा के दिधी गांव में अधूरी सड़क और नाली बनी दुर्घटना का कारण, लोग परेशान

पटमदा (आजाद सिपाही)। जुगसलाई विधानसभा क्षेत्र के पटमदा प्रखंड स्थित दिधी गांव में हरि मंदिर के पास अधूरी पड़ी सड़क इन दिनों गंभीर दुर्घटनाओं का कारण बनती जा रही है।

बेलटांड-रघुनाथपुर मुख्य सड़क का यह हिस्सा लगभग 100 फीट तक जर्जर अवस्था में है। जिसे मरम्मत के दौरान ठेकेदार अधूरा छोड़ गया।बीते दिनों लगातार बारिश में यह हिस्सा जलजमाव और गड्ढों में तब्दील हो चुका है। जिससे राहगीरों और खासतौर पर दुपहिया वाहन चालकों के लिए बेहद खतरनाक हो गया है। बीते मंगलवार को बोड़ाम निवासी एवं पटमदा की बीपीओ शकुन्तला महतो खुद सड़क की बहाली का शिकार हो गयी। उन्होंने बताया स्कूटी से ऑफिस जाने के दौरान गड्ढे में पानी भरने की वजह से फिसलकर गिर पड़ी और बुरी तरह घायल हो गई।वही स्थानीय ग्रामीणों के अनुसार यह समस्या कोई नई नहीं है। बीते कई दिनों से हो रही बारिश में प्रतिदिन कोई न कोई अधूरी सड़क पर फिसलकर घायल हो रहा है। ग्रामीणों का कहना है ठेकेदार मरम्मत कार्य अधूरा क्यों छोड़ा, इस पर कोई जवाबदेही तय नहीं हो पा रही है। विशेष रूप से यह भी उल्लेखनीय है गांव में लाखों रुपये की लागत से एक पक्की नाली का निर्माण किया गया था। ताकि पानी की निकासी ठीक ढंग से हो सके। लेकिन दुर्भाग्यवश उस नाली को सड़क या जलजमाव वाले हिस्से से जोड़ा ही नहीं गया। जिसके कारण नाली बंका पड़ी है और पानी का बहाव सड़क पर हो रही। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की जल्द अधूरी सड़क की मरम्मत करायी जाये और नाली को जलनिकासी से जोड़ा जाये। ताकि दुर्घटनाओं पर रोक लगे और आम लोगों को राहत मिल सके।

विश्व महामारी स्वच्छता प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन



सरायकेला (आजाद सिपाही)। समाज कल्याण निदेशालय रांची के निर्देश पर समाज कल्याण एवं स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त तत्वाधान में राजनगर प्रखंड के एदल पंचायत में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के तहत विश्व महामारी स्वच्छता प्रबंधन विषय पर जिला स्तरीय उन्मुखीकरण सह प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। मौके पर पूर्विमा नायक,कैस वर्कर वरुणा महतो एवं जिला स्वास्थ्य विभाग की एएनएम की उपस्थिति में महिलाओं और किशोरियों को महामारी काल में स्वच्छता, स्वास्थ्य सुरक्षा, एवं मासिक धर्म प्रबंधन के बारे में जागरूक किया गया। वक्ताओं ने मासिक स्वच्छता के महत्व, संक्रमण से बचाव एवं सही खानपान की जानकारी साझा की।इस अवसर पर स्वास्थ्य पोषण आहार कैप भी आयोजित की गई।जहां महिलाओं एवं किशोरियों को संतुलित भोजन के महत्व के बारे में बताया गया। साथ ही सेनेटरी पेड़, स्वास्थ्य कीट, ओआरएस पाउडर का वितरण किया गया। स्वास्थ्य विभाग द्वारा एनीमिया जांच भी किया गया। ताकि महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति की समीक्षा की जा सके।मौके पर एदल पंचायत के विभिन्न गांवों से बड़ी संख्या में महिलाएं और किशोरियां शामिल होकर प्रशिक्षण में सक्रिय भागीदारी दिखायी।

झामुमो के गणेश महाली ने सड़क-नाली के निर्माण की मांग को लेकर नगर निगम को सौंपा ज्ञापन

आजाद सिपाही संवाददाता

आदित्यपुर। आदित्यपुर नगर निगम क्षेत्र के विभिन्न वार्डों में सड़क, पक्की नाली और पेवर्स ब्लॉक निर्माण को लेकर झारखंड मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ नेता सह पूर्व विधानसभा प्रत्याशी गणेश महाली ने नगर निगम आयुक्त रवि प्रकाश को एक मांग पत्र सौंपा। मांग पत्र के माध्यम से उन्होंने क्षेत्र की समस्याओं से नगर निगम प्रशासन को अवगत कराया।मौके पर उन्होंने वार्ड संख्या 6, 20, 25, 33 और 35 की विशेष रूप से चर्चा की। जहां बस्तियों में पक्की सड़कों और नालियों की गंभीर समस्या है। श्री महाली ने बताया क्षेत्र भ्रमण के दौरान स्थानीय



निवासियों ने कई बार इस समस्या की जानकारी दी। बारिश के मौसम में कच्ची सड़कों और अधूरी नालियों के कारण हालात और भी खराब हो जाते हैं। पानी लोगों के घरों तक पहुंचने से जनजीवन अस्त-व्यस्त हो रहा है। गणेश महाली ने नगर आयुक्त से आग्रह

राष्ट्रीय सुड़ी समाज के अध्यक्ष को धमकी देने का मामला कांग्रेस के जिला महासचिव ने आरोपी की गिरफ्तारी की मांग की

आजाद सिपाही संवाददाता

सरायकेला। राष्ट्रीय सुड़ी समाज (युवा प्रकोष्ठ) के केन्द्रीय अध्यक्ष एवं कांग्रेस जिला महासचिव अजय कुमार मंडल ने राष्ट्रीय सुड़ी समाज के केन्द्रीय अध्यक्ष सह आरटीआइ कार्यकर्ता संघ के केन्द्रीय महासचिव कृतिवास मंडल को फोन पर धमकी देने पर कड़ी निंदा की है। उन्होंने इसे लोकतंत्र और आरटीआइ आंदोलन पर सीधा हमला बताया। उन्होंने प्रशासन से आरोपी की अविलंब पहचान कर गिरफ्तारी की मांग की। अजय मंडल ने कहा आरटीआइ कार्यकर्ता देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत करने का कार्य करते हैं। उन्हें धमकाना न केवल असंवैधानिक है बल्कि यह पारदर्शिता और जवाबदेही के अधिकार पर सीधा



प्रहार है। उन्होंने कहा ऐसी हरकतें आरटीआइ कार्यकर्ताओं की आवाज को दबा नहीं सकतीं। उन्होंने कहा शुक्रवार को राष्ट्रीय सुड़ी समाज का एक प्रतिनिधिमंडल डीसी और एसएसपी से मिलकर जापन सौंप कर गंभीर मामले में निष्पक्ष जांच और त्वरित कार्रवाई की मांग करेगा। उन्होंने प्रशासन से अपील की पीड़ित आरटीआइ कार्यकर्ता की सुरक्षा सुनिश्चित की जाये, ताकि वह निर्भीक होकर जनहित में कार्य करते रहें।

झामुमो ने कोल्हान से मनोज कुमार को सौंपी जिम्मेदारी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची/ जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। झारखंड मुक्ति मोर्चा की केन्द्रीय समिति ने बुधवार को पार्टी के निर्णयों, कार्यक्रमों और सम-सामयिक विषयों पर मीडिया में प्रभावी रूप से पक्ष रखने के लिए प्रवक्ताओं का नया पैलन घोषित किया है। इस पैलन में राज्य के विभिन्न जिलों से चुने गये पार्टी के सक्रिय और अनुभवी नेताओं को शामिल किया गया। राज्य के मुख्यमंत्री सह झामुमो के केन्द्रीय अध्यक्ष हेमंत सोरेन के नेतृत्व में गठित पैलन में कोल्हान प्रमंडल के विशेष रूप से मनोज कुमार यादव को प्रवक्ता की अहम जिम्मेदारी सौंपी गयी है। मनोज कुमार यादव पूर्व रणजी क्रिकेट खिलाड़ी हैं और खेल, समाज सेवा तथा विभिन्न अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संगठनों से सक्रिय रूप से जुड़े हुए



हैं। साथ ही वे एक खेल विश्लेषक के रूप में ऑल इंडिया रेडियो और कई राष्ट्रीय टीवी चैनलों पर भी नियमित रूप से नजर आते हैं। राजनीतिक, सामाजिक और खेल जगत में उनके व्यापक अनुभव से पार्टी को निश्चित रूप से लाभ मिलेगा। पार्टी के वरिष्ठ नेता विनोद कुमार पांडेय द्वारा हस्ताक्षरित आदेश में कहा गया है कि सभी पैलन सदस्य पार्टी की गरिमा और नीतियों का पालन करते हुए मीडिया में संवाद स्थापित करेंगे।



तक के 50 से अधिक छात्रों ने रद्दी व बेकार समझने वाली वस्तुओं को सुंदर और उपयोगी कलाकृतियों में बदलकर दिखाया। उन्होंने रिसाइकलिंग और रचनात्मकता से कैसे कचरे को खजाने में बदल सकती इसकी जानकारी दी। यह आयोजन टाटा स्टील ने झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय की सहयोग से की। कार्यक्रम के दौरान क्षेत्रीय पदाधिकारी राम

प्रवेश कुमार ने बच्चों के कार्यों की सराहना की। उन्होंने टाटा स्टील को इस पहल को समुदाय में पर्यावरण जागरूकता फैलाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। आगामी दिनों में टाटा स्टील के द्वारा सामुदायिक सफाई अभियान, वृक्षरोपण कार्यक्रम एवं पर्यावरण और सतत विकास के विशेषज्ञों के साथ तकनीकी सत्र जैसे कई आयोजन भी किये जायेंगे।

सिदगोड़ा चेन छिनतई मामले में चार गिरफ्तार



आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। जमशेदपुर की सिदगोड़ा पुलिस ने चेन छिनतई मामले का उद्घेदन करते हुए चार अभियुक्तों को गिरफ्तार कर जेल भेजा है। गिरफ्त में आये अभियुक्तों में मानगो टीचर्स कॉलोनी का शंकर महतो उर्फ सूरज (21), आजादनगर ओल्ड पुरलिया रोड का विशाल सिंह उर्फ नाडू (19), मानगो गुरुद्वारा रोड का मोहित वर्मन (21) और मानगो का विशाल कुमार सोनी (31) शामिल है। वहीं मोहित वर्मन और शंकर महतो और विशाल सिंह का

अपराधिक इतिहास रहा है। अभियुक्तों के पास से झपट्टमार कर लुटा गया सोने के चेन का गला हुआ हिस्सा, एक मोटरसाइकिल, दो मोबाइल व एक पासबुक और एटीएम बरामद किया है। बुधवार को सिटी एसपी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पुलिस उपधीक्षक मुख्यालय के नेतृत्व में छापेमारी दल का गठन किया गया, जिसके लिए लगातार सीसीटीवी खंगाले जा रहे थे। फिलहाल चारों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है।





Prince Kumar



खूंटो (आजाद सिपाही)। तोरपा के विधायक सुदीप गुड़िया ने बुधवार को मैट्रिक परीक्षा में खूंटो जिला टॉपर बनी वर्षा कुमारी को

रांची, गुरुवार, 29 मई, 2025
www.azadsipahi.in

इचागढ़ (आजोड़ा सिपाही)। सरायकेला-खरसावां जिला के इचागढ़ प्रखंड क्षेत्र के सितु गांव में दो हाथियों ने जमकर उत्पात मचाया। हाथियों ने रंजीत साहू का सरकारी राशन दुकान का दरवाजा तोड़कर दुकान में रखे चावलों को अपना निवाला बनाया। हाथियों ने गीता देवी का खपड़िया घर का छप्पर को तोड़ दिया एवं घर को क्षतिग्रस्त

ईचागढ़ (आजाद सिपाही)। ईचागढ़ प्रखंड क्षेत्र के गौरांगकोचा निवासी गुरा कालिंदी के पांच बहारी पुत्री आनंद कालिंदी लीवर की समस्या से ग्रस्त है। चिकित्सकों द्वारा अभिलेख ऑपरेशन की सलाह दी गयी है। इस बात को गुरा कालिंदी ने विधायक सविता महतो को बताया और ईलाज में मदद कर के का आग्रह किया। विधायक सविता महतो ने मामले को गंभीरता से लेकर मुख्यमंत्री राहें कोष से आनंद कालिंदी के ईलाज के लिए एक लाख रुपये का चेक उनके पिता गुरा कालिंदी को सौंपा। उक्त बात कि जानकारी झामुमो केंद्रीय सदस्य काबल महतो ने दी।

MEENA GENERAL HOSPITAL

(A Unit of Meena Hospital Pvt.Ltd.)

Ambulance Facilities

SPECIALTIES

- ❑ Anesthesiology.
- ❑ Critical Care.
- ❑ Dental.
- ❑ Internal Medicine.
- ❑ Lab & Radiology.
- ❑ Obstetrics & Gynecology
- ❑ Ophthalmology
- ❑ Pediatrics & Neonatology.
- ❑ Urology.
- ❑ General Surgery.
- ❑ Orthopedics & Trauma.
- ❑ Physiotherapy.

 Ghujadih, G.T.Road, Near Kulgo Toll Plaza,
P.s.- Dumri, Giridih, (Jh.)

 8969984705

॥ श्री गणेशाय नमः ॥
॥ जय श्यामं लाली मंडया ॥





पं० शम्भुनाथ उपाध्याय

स्वर्णं पदकं प्राप्य... ज्योतिष्य शिराग्राह्य एवं ज्योतिष्य हार्दिकं पदं ये सम्मानित

आपका कार्य सफल होना चाहिए
शायन के हाव
वक्षिणा अपने स्वच्छ अनुसार दे।
रावणा संहिता ज्ञाता सरल व सटीक उपायों द्वारा हर समस्या के समाधान के लिए संपर्क करें।

मिलने का समय :
दिन सोमवार से शनिवार
समय : सुबह 9:00 बजे से दोपहर 2:00 बजे, 3 बजे से रात्रि 08 बजे तक
दिन रविवार
समय : सुबह 7:00 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक

 इन्द्रजीत भवन, पहाड़ी मंदिर के सामने, बानों मंजिल रोड, राँची-834001
9431585446 | 7903633179



A Jewel for every Tradition

Glossy Jewels
Let's Shine Everyday

अब आपके शहर रौबी में
स्टर्लिंग ज्वेलरी और प्रीमियम आर्टिफिशियल
ज्वेलरी का विशेष संग्रह अब एक दूत के नीचे

Special offer :

- Flat 20% off on Sterling Silver Jewellery
- Flat 50% off on Artificial Jewellery

Glossy Jewels.com

Near Satyabhama Tower, Hazaribagh Road, Lalpur, Ranchi-834001

Team of Glossy Jewels
 @glossyjewels Contact@glossyjewels
7667873439

गाजा में खाने के लिए भगदड़, 3 की मौत, 46 घायल



राफा (आजाद सिपाही)। गाजा के दक्षिणी शहर राफा में खाना लेने पहुंचे लोगों में भगदड़ मच गयी। इससे तीन लोगों की मौके पर मौत हो गयी, वहीं 46 घायल हो गये। इसके अलावा 7 लोग लापता भी हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक यह भगदड़ इजराइली सैनिकों के हवा में फायर करने के बाद बची। वहीं इजराइल सेना ने कहा कि उसके सैनिकों ने भीड़ को नियंत्रण में रखने के लिए चलायी थी। गाजा में लोगों को खाना मुहैया कराने के लिए फूड सेंटर शुरू किये जा रहे हैं। राफा शहर में ऐसे ही एक सेंटर पर खाना लेने के लिए हजारों लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गयी थी। इजराइली फायरिंग के बाद हजारों फिलिस्तीनी खाने के लिए सेंटर पर दौड़ पड़े।

डीपीएस में अनुशासनहीनता और भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं : डॉ जया चौहान

हर माह काम के आधार पर शिक्षकों को भी मिलेगा पुरस्कार

स्कूल में शुगर टेस्ट की भी होगी व्यवस्था

छात्रों के लिए स्किल डेवलपमेंट पर भी जोर

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रांची के डीपीएस की नवनियुक्त प्राचार्य डॉ जया चौहान का विजन एकदम साफ है। वह शालीन और मिलनसार महिला हैं। पूरी तरह से काम पर जोर देती हैं। उनके योगदान के बाद से ही स्कूल का माहौल बदल गया है। वह अनुशासनहीनता और करप्शन को बर्दाश्त नहीं करने वाली हैं। इसके साथ संकेत उन्होंने बुधवार को आजाद सिपाही से बातचीत करने



के दौरान दिये। उन्होंने कहा कि डीपीएस का देश ही नहीं बल्कि इसका नाम विदेशों में भी हो इसके लिए वह काम करेंगी। यहाँ से निकलने वाले बच्चे देश के

अलावा विदेश में भी अपनी पहचान बनायें उस पर फोकस होगा। अभी योगदान दिये कुछ ही दिन हुआ है, वह सब कुछ समझ रही हैं। गर्मी छुट्टी होने के बावजूद

वह हर दिन ऑफिस आ रही हैं। एकेडमिक क्षेत्र में ज्यादा काम करने को उन्होंने टारगेट बनाया है। वह जल्द ही हर माह बेहतर काम करने वाले शिक्षकों को पुरस्कृत करेंगी। शिक्षकों का रेगुलर एकेडमिक ऑडिट होगा। उनका पूरा फोकस छात्रों और शिक्षकों पर है। छात्र सिर्फ अच्छे अंक ही नहीं लायें बल्कि अच्छे नागरिक बनें इस दिशा में काम करेंगी। अच्छा व्यवहार करना, अनुशासित रहना, माता-पिता और अपने से बड़ों का सम्मान करना, भारतीय संस्कृति जो कुछ सिखाती है। उसमें बच्चे आगे बढ़ें, इसपर भी फोकस रहेगा। इस विद्यालय के बच्चे खेल

के क्षेत्र में भी नाम रोशन करें, इस पर भी जोर दिया जायेगा। जो बच्चे अच्छे खिलाड़ी बन सकते हैं और विद्यालय का नाम कर सकते हैं उन्हें हर प्रकार की सुविधा का इंतजाम किया जायेगा। उन्होंने कहा कि शुगर रोग की समस्या से छात्रों को अवगत कराया जायेगा। विद्यालय में शुगर टेस्ट की व्यवस्था की जायेगी। कोल्डड्रिंक्स और अन्य शीतलपेय पदार्थ से होने वाली हानि की जानकारी विद्यार्थियों को दी जायेगी। डॉ जया चौहान का पूरा फोकस विद्यालय के छात्रों का भविष्य बेहतर हो इस दिशा में केन्द्रित है। विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी अपनी समस्या बेहिचक उनसे कह सकते हैं।

भारत में बने कावेरी इंजन की रूस में फ्लाईंग टेस्टिंग



आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। भारत में बने कावेरी जेट इंजन की फ्लाईंग टेस्टिंग डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन (डीआरडीओ) रूस में कर रहा है। ये रियल सिचुएशन में इंजन की कैपेसिटी आंकने के लिए अहम है। अधिकारियों ने बताया इंजन पर करीब 25 घंटे का परीक्षण होना बाकी है। स्लॉट मिलने पर टेस्टिंग की जायेगी। इसकी कैपेसिटी शोकेस के लिए इसे एक लाइट कांबैट एयरक्राफ्ट (एलसीए) में लगाने की योजना है। शुरूआत में कावेरी इंजन को तेजस जैसे स्वदेशी एलसीए में लगाने की

योजना थी, लेकिन कार्यक्रम में देरी के चलते तेजस में अमेरिकी इंजन जीइ-404 लगाया गया। इस इंजन को अब भारत में बने लंबी दूरी के घातक अनमैड एयर व्हीकल (यूएवी) यानी स्टेल्थ ड्रोन की पावर बढ़ाने के लिए फिर से तैयार किया जा रहा है। एएमसीए के लिए पावरफुल इंजन बनाने की तैयारी कावेरी 80 किलो न्यूटन थ्रस्ट (पावर) वाला एक लो बार्डपास, ट्विन स्प्रूल टबोफैन इंजन है। बेहतर मैनुअल कंट्रोल के लिए इसमें ट्विन-लेन फुल अथॉरिटी डिजिटल इंजन कंट्रोल (एफएडीसी) सिस्टम लगाया गया है।

राष्ट्रपति शासन वाले मणिपुर में नयी सरकार बनाने की तैयारी



राज्यपाल के पास पहुंचे 10 विधायक, 44 विधायकों के समर्थन का दावा

आजाद सिपाही संवाददाता

इंफाल। मणिपुर में 10 विधायकों ने बुधवार को राज्यपाल अजय कुमार भल्ला से मिलकर सरकार बनाने का दावा पेश किया है। इनमें आठ भाजपा, एनपीपी के एक और एक निर्दलीय विधायक

शामिल थे। विधायकों ने दावा किया है, इनके पास 44 विधायकों का समर्थन है। राज्यपाल से मुलाकात के बाद भाजपा विधायक थोकचोम राधेश्याम ने कहा कि कांग्रेस को छोड़कर 44 विधायक मणिपुर में सरकार बनाने के लिए तैयार हैं। नयी सरकार के गठन का विरोध करने वाला कोई नहीं है। मणिपुर विधानसभा अध्यक्ष सत्यव्रत ने 44 विधायकों से मुलाकात की है।

दूसरी तरफ, विधानसभा अध्यक्ष सत्यव्रत केन्द्रीय नेतृत्व के बुलावे पर दिल्ली रवाना हो गये हैं। जल्द ही सरकार बनाने पर आलाकमान का फैसला आ सकता है। मणिपुर में 60 विधानसभा सीटें हैं। सरकार बनाने के लिए बहुमत का आंकड़ा 31 है। बताते चलें कि 9 फरवरी को भाजपा सरकार का नेतृत्व करने वाले तत्कालीन सीएम एन बोरेन सिंह ने इस्तीफा दे दिया था।

डीएसपीएमयू में शीघ्र ही भारतीय ज्ञान प्रणाली केन्द्र स्थापित होगा: डॉ तपन कुमार शांडिल्य

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। बुधवार को पूर्वाह्न 11 बजे डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची के सभागार में व्यावहारिक संवेदा एवं मूल्यों के विज्ञान विषय पर एक दिवसीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ कुलगीत एवं द्वीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। इसके उपरान्त अतिथियों को पुष्पगुच्छ दे कर सम्मानित किया गया। स्वागत भाषण एवं विषय प्रवेश विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विषय की विभागाध्यक्ष डॉ आभा झा के द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य ने कहा कि वेदांत का प्रभाव केवल भारत के आध्यात्मिक और दार्शनिक मूल्यों तक ही सीमित नहीं है बल्कि



भारत की राजनीतिक और सामरिक संस्कृति पर भी वेदांत का गहरा प्रभाव पड़ा है। उन्होंने कहा कि वेदांत केवल एक दार्शनिक विचारधारा नहीं बल्कि जीवन को सुंदर, सरल और सार्थक बनाने की एक पद्धति है। आज की इस जटिल दुनिया में वेदांत का व्यवहारिक रूप अपनाना आवश्यक है, जिससे व्यक्ति न केवल आत्मिक शांति पा सकता

बल्कि समाज में प्रेम, करुणा और एकता का संदेश फैला सकता है। उन्होंने कहा कि भारतीय दर्शन को आध्यात्मिक दर्शन माना जाना चाहिए। वेदांत दर्शन असीमित है। वेदांत अपने मूल्यों द्वारा समाज का विकास करता है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और वक्ता पद्मश्री डॉ अशोक भगत ने वेदांत पर अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि सभी जीवों का एक

साथ होना ही वेदांत है। उन्होंने काफी सारगर्भित तरीके से वेदांत को परिभाषित करते हुए उसके मूल तत्वों को उदाहरणों के साथ समझाया। विशिष्ट वक्ता डॉ आरके राय ने कहा कि मानवता ही सबसे बड़ा गुण होता है। मौके पर रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अजीत कुमार सिन्हा ने कहा कि मनुष्यों को वेद, ग्रंथ और उपनिषद का सार समझना अपने जीवनकाल में अति आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रतिदिन 15- 20 मिनट वेद , उपनिषद जैसे ग्रंथों को पढ़ना आवश्यक बताया। सरला बिरला विश्वविद्यालय के महानिदेशक डॉ गोपाल पाठक ने व्यावहारिक वेदांत एवं विज्ञान के मूल्यों की महाभारत के प्रसंगों से जोड़ कर अपने विचार व्यक्त किया। उन्होंने काफी रोचक तरीके से भगवान कृष्ण के विभिन्न चरित्रों के

संवाद के माध्यम से वेदांत के मूल ज्ञान की चर्चा की। उन्होंने इस संदर्भ में अहिल्या बाई होल्कर के व्यावहारिक ज्ञान का उल्लेख किया। मौके पर झारखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ टीएन साहू ने कहा कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक क्षेत्रों में वेदांत का चिंतन असीमित है। इस अवसर पर डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ यूसी मेहता और साई नाथ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ एसपी अग्रवाल ने भी उपरोक्त विषय पर अपना व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में मंच संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक मनीष मिश्रा ने और धन्यवाद कार्यक्रम की समन्वयक और इंग्लिश विभाग की समन्वयक डॉ पोयुषबाला ने दिया। यह जानकारी पीआरओ डॉ राजेश कुमार सिंह ने दी।

7903636615
8434179089

www.shreebharatplywood.com
shreebharatplywood@gmail.com

SHREE BHARAT PLYWOOD
PLYWOOD | LAMINATES | VENEER

OLD H.B ROAD, KOKAR, RANCHI - 834001

ऑख अस्पताल THIRD EYE CLINIC

अच्छा देखना सबका अधिकार

आंखों का विश्वस्तरीय जाँच
नेपाल के सुप्रसिद्ध डॉक्टर के द्वारा

DR. VISHAL CHOUDHARY
MBBS, MS (OPHTHAL) (RIMS RANCHI)
FICO (I) (U.K. LONDON)

Hospital : N.H.-33 Near Madarsha, Irba, Ormanjhi, Ranchi - 7903381944
Branch : Bandhgadi, Dipatoli, Ranchi - Mob.: 9031984410

Dr. Anup's HLCCS यंची में

स्किन एवं लेजर सेन्टर
चर्म रोग चिकित्सा केन्द्र

सभी प्रकार के चर्म रोग एवं गुप्त रोग
एवं कॉस्मेटिक सर्जरी के लिए सम्पर्क करें।

Mob. 09334334935, 09431529553

हरनु बाई पास रोड, पुष्पा विहार Opp. माही रेस्टोरेन्ट, अरवाड़ा, रांची-834002

PROPERTIES DEALER

जमीन, प्लॉट, मकान
खरीदने व बेचने एवं अपनी जमीन में
बिल्डर द्वारा प्लॉट बनवाने के लिए
सम्पर्क करें
मो. 8102553784
9308973643

WATER WORLD

बोरिंग के लिए संपर्क करें।

Lower P.P. Compound Near Gurunanak, School, Ranchi

प्रकाशित

झारखण्ड अधिविधायक परिषद, रांची द्वारा आयोजित सर्व-XI की बोर्ड परीक्षा - 2025 के लिए JCERT, रांची द्वारा जारी नये संशोधित पाठ्यक्रम (बहुधिकल्पीय प्रश्न) पर पूर्णतः आधारित एक अत्यंत महत्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नों का उत्तर सहित संकलन

सर्व श्रेष्ठ ग्रंथ सिंग, रांची द्वारा

Verma's Today CHAPTER WISE CLASS - XI 2025

Arts, Science, Commerce एवं विज्ञान के विषय अलग-अलग पुस्तकें

All Subjects Combined in ONE BOOK

Verma Press Pvt. Ltd.

KRISHNA Pure Veg Restaurant

202, 2nd Floor, Pitamber Estate, Khelgaon Chowk, Dipatoli, Ranchi

(Wedding | Corporate Parties | Birthday | Anniversary) & Breakfast & Lunch Packets

0651 3139475, 81020 89531, 9942000940

Indian - Rajasthani - North Indian - Chinese

EXPERIENCE Happy Riding

मात्र ₹ 38,000/- On Road

- वैटरी स्कूटी
- कम लागत
- कम रखरखाव
- लाइसेंस मुक्त
- एक साल की वारंटी
- 60 किलोमीटर रेंज

J.K SALES

Pillar No. 83, In Between O.T.C. Ground & Piska More Ratu Road, Beside M-Bazar, Lakdi Tall, Ranchi

M.- 9386070011

TEXMO AQUATEX

Borewell Submersibles Single Phase/Three Phase Domestic/Agriculture/Industrial Pumps

Agricultural Monoblocks Open-well Submersibles Pumps Pressure Boosting Systems

Eleven Times Export Award Winner

Manufactured Exclusively by **AQUASUB ENGG. COIMBATORE**

Authorised Dealer: **PUMPS & PRIMOVERS**

Dr. Fateullah Road, Ranchi-834001, Jharkhand
Ph.: 0651-3580818, Mob.: 9431108785, 9334702026, 9234300862
Website : www.pumpsandprimovers.co.in, Email : jai.kissan553@gmail.com

आजाद सिपाही को और से स्वत्वाधिकारी लैटडस्केप मीडिया प्रा. लि. प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललनुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित।
संपादक : हरिनारायण सिंह, स्थानीय संपादक* : विनोद कुमार, **पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, राज्य समन्वय संपादक : अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवारों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109, Postal Registration No. RN/249/2019-21

